नई शिक्षा नीति 2020

उत्तर प्रदेश के समस्त विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के लिए न्यूनतम एकीकृत पाठ्यक्रम

विषय- संस्कृत (स्नातक स्तर- मुख्य पाठ्यक्रम )

बी.ए.प्रथम वर्ष-

प्रथम सेमेस्टर- संस्कृत पद्य साहित्य एवं व्याकरण कोड- A020101T

द्वितीय सेमेस्टर- संस्कृत गद्य साहित्य, अनुवाद एवं संगणक अनुप्रयोग कोड- A020201T

बी.ए. द्वितीय वर्ष-

तृतीय सेमेस्टर - संस्कृत नाटक एवं व्याकरण कोड- A020301T

चतुर्थ सेमेस्टर- काव्यशास्त्र एवं संस्कृत लेखन कौशल कोड- A020401T

बी.ए. तृतीय वर्ष-

पंचम सेमेस्टर - प्रथम प्रश्न पत्र- वैदिक वाङ्मय एवं भारतीय दर्शन कोड- A020501T

द्वितीय प्रश्न पत्र- व्याकरण एवं भाषा विज्ञान कोड- A020502T

षष्ठ सेमेस्टर- प्रथम प्रश्न पत्र- आधुनिक संस्कृत साहित्य कोड- A020601T

द्वितीय प्रश्न पत्र (वैकल्पिक)- योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा कोड- A020602T

अथवा

तृतीय प्रश्न पत्र (वैकल्पिक) -आयुर्वेद एवं स्वास्थ्य विज्ञान कोड- A020603T

अथवा

चतुर्थ प्रश्न पत्र (वैकल्पिक) - भारतीय वास्तुशास्त्र कोड-A020604T

अथवा

पंचम प्रश्न पत्र(वैकल्पिक) -ज्योतिषशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्त कोड-A020605T

अथवा

षष्ठ प्रश्न पत्र (वैकल्पिक) - नित्यनैमित्तिक अनुष्ठान कोड- A020606T

उपर्युक्त वैकल्पिक प्रश्न पत्रों में से कोई एक

| Programme/Class:Certificate<br>कार्यक्रम /वर्ग- सर्टिफिकेट | Year: First<br>वर्ष- प्रथम | Semester: I<br>सेमेस्टर – प्रथम |
|---|---|---|
| विषय- संस्कृत | | |
| प्रश्न पत्र कोड-A020101T | प्रश्न पत्र शीर्षक- संस्कृत पद्य साहित्य एवं व्याकरण | |

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

- विद्यार्थी संस्कृत साहित्य का सामान्य परिचय प्राप्त कर काव्य के विभिन्न भेदों से परिचित हो सकेंगे।
- वह संस्कृत पद्य साहित्य की सुगीतात्मकता का सौंदर्यबोध कर सकेंगे।
- उनमें काव्य में प्रयुक्त रस,छंद,अलंकारों को समझने की क्षमता विकसित होगी।
- पद्य में निहित सूक्तियों एवं सुभाषित वाक्यों के माध्यम से उनके नैतिक एवं चारित्रिक उन्नयन होगा।
- विद्यार्थियों के शब्दकोश में वृद्धि होने के साथ-साथ वह संस्कृत श्लोकों के शुद्ध और सस्वर उच्चारण के कौशल में निपुण बनेंगे ।
- संस्कृत व्याकरण का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर उसकी वैज्ञानिकता से सुपरिचित हो सकेंगे ।
- संस्कृत वर्णों के शुद्ध उच्चारण कौशल का विकास होगा ।
- स्वर एवं व्यंजन के मूल भेद को समझ कर पृथक अर्थावगमन की क्षमता उत्पन्न होगी ।
- स्वर,व्यंजन एवं विसर्ग संधि का विशिष्ट ज्ञान एवं उनके अनुप्रयोग का कौशल विकसित होगा।

| Credits: 6 | Core Compulsory |
|---|---|
| Max. Marks: 25+75 | Min. Passing Marks: |
| Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): L-T-P: 6-0-0. | |

| Unit<br>इकाई | Topics पाठ्य विषय | No. of Lectures<br>व्याख्यान संख्या |
|---|---|---|
| | प्रथम भाग (PART-1) | |
| I | क- संस्कृत वाङ्मय में पारंपरिक ज्ञान विज्ञान एवं राष्ट्र गौरव - | 4 |

| | | |
|---|---|---|
| | वैदिक और लौकिक संस्कृत साहित्य में भारतीय दर्शन, ज्योतिष, योग, वास्तु एवं आयुर्वेद और विज्ञान इत्यादि का सामान्य परिचय | 8 |
| II | किरातार्जुनीयम् – प्रथम सर्ग (सम्पूर्ण)<br>(श्लोक एवं सूक्तियों की व्याख्या) | 12 |
| III | नीतिशतकम् (श्लोक सख्या 1 से 25)<br>(श्लोक एवं सूक्तियों की व्याख्या) | 10 |
| IV | किरातार्जुनीयम् एवं नीतिशतकम् से सम्बन्धित समीक्षात्मक एवं मूल्यपरक प्रश्न | 11 |
| | द्वितीय भाग (Part II) | |
| V | संज्ञा प्रकरण (लघु सिद्धान्त कौमुदी) | 12 |
| VI | अच संधि (लघु सिद्धान्त कौमुदी)<br>(सूत्र व्याख्या एवं सूत्र निर्देश पूर्वक संधि एवं संधि विग्रह) | 12 |
| VII | हल् सन्धि (लघु सिद्धान्त कौमुदी)<br>(सूत्र व्याख्या एवं सूत्र निर्देश पूर्वक संधि एवं संधि विग्रह) | 11 |

| | | |
|---|---|---|
| VIII | विसर्ग संधि<br>(सूत्र व्याख्या एवं सूत्र निर्देश पूर्वक संधि एवं संधि विग्रह) | 10 |

संस्तुत ग्रंथ-

- किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग), डॉ राजेंद्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद
- किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग), डॉ जनार्दन शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन, दिल्ली
- किरातार्जुनीयम् महाकाव्य, अनु. श्री राम प्रताप त्रिपाठी, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद
- कुमारसंभवम् (प्रथम सर्ग), डॉ उमेश चंद्र पांडे, प्राच्य भारतीय प्रकाशन,गोरखपुर
- कुमारसंभवम् (प्रथम सर्ग), श्री कृष्णमणि त्रिपाठी, चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी
- नीतिशतकम्, भर्तृहरि, (व्या०) सावित्री गुप्ता , विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 2008
- नीतिशतकम्, भर्तृहरि, (व्या०) राकेश शास्त्री, परिमल पब्लिकेशन, दिल्ली , 2003
- नीतिशतकम्, समीर आचार्य, प्राच्य भारती प्रकाशन, गोरखपुर
- संस्कृत साहित्य का इतिहास, डॉ बलदेव उपाध्याय, चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी
- संस्कृत साहित्य का इतिहास उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखंबा भारती अकादमी, वाराणसी, पुनर्मुद्रित 2012
- संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गैरोला, चौखंबा विद्याभवन वाराणसी, पंचम संस्करण , 1997
- लघु सिद्धांत कौमुदी , वरदराज, भैमी व्याख्या , भीमसेन शास्त्री (1-6 भाग) ,भैमी प्रकाशन, दिल्ली 1993
- लघु सिद्धांत कौमुदी, गोविंद प्रसाद शर्मा एवं आचार्य रघुनाथ शास्त्री,चौखंबा सुरभारती प्रकाशन
- लघु सिद्धांत कौमुदी, डॉ उमेश चंद्र पांडे, चौखंबा प्रकाशन
- लघु सिद्धांत कौमुदी (संज्ञा संधि प्रकरण), डॉ वेदपाल, साहित्य भंडार, मेरठ
- लघु सिद्धांत कौमुदी, डॉ रामकृष्ण आचार्य, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

**सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)**

.....

प्रस्तावित सतत मूल्यांकन-

( क) पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रंथों पर आधारित अधिन्यास( असाइनमेंट) 15 अंक

एवं

संस्कृत श्लोकों के शुद्ध उच्चारण की प्रायोगिक/मौखिक परीक्षा

एवं

माहेश्वर सूत्र एवं प्रत्याहार निर्माण विषयक परियोजना कार्य एवं मौखिकी

| (ख) लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ/ लघु उत्तरीय) | 10 अंक |
|---|---|
| Course prerequisites: सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL) | |
| Suggested equivalent online courses: ..... | |
| Further Suggestions: ..... | |

| Programme/Class: **Certificate** कार्यक्रम /वर्ग- सर्टिफिकेट | Year:**First** वर्ष- **प्रथम** | Semester: **II** सेमेस्टर - **द्वितीय** |
|---|---|---|
| विषय- **संस्कृत** | | |
| प्रश्न पत्र कोड-A020201T | प्रश्न पत्र शीर्षक- **संस्कृत गद्य साहित्य,अनुवाद एवं संगणक अनुप्रयोग** | |

Course outcomes: **अधिगम उपलब्धि-**

- **विद्यार्थी संस्कृत गद्य साहित्य का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर, गद्य काव्य के भेदों सुपरिचित हो सकेंगे|**
- **संबंधित साहित्य के माध्यम से उनका नैतिक एवं चारित्रिक उत्कर्ष होगा ।**
- **राष्ट्रभक्ति की भावना प्रबल होगी तथा उत्तम नागरिक बनेंगे |**
- **अनुवाद कौशल में वृद्धि होगी |**
- **संस्कृत गद्य के धाराप्रवाह एवं शुद्ध वाचन का कौशल विकसित होगा |**
- **विद्यार्थी संगणक का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर, अधिगम क्षमता में वृद्धि हेतु इसका उपयोग कर सकने में सक्षम होंगे।**
- **E-content एवं डिजिटल लाइब्रेरी का उपभोग कर पाने में समर्थ होंगे ।**
- **संस्कृत भाषा और साहित्य के नित-नूतन अन्वेषण को खोज पाने तथा उससे स्व-ज्ञान कोष में वृद्धि कर पाने योग्य होंगे ।**
- **संगणक के प्रयोग के माध्यम से संस्कृत ज्ञान के प्रचार प्रसार एवं आदान-प्रदान करने में कुशल बनेंगे।**
- **पारंपरिक एवं वैश्विक ज्ञान में सामंजस्य बनाकर ज्ञान की अभिवृद्धि करने एवं जीविकोपार्जन के नए मार्ग खोजने का कौशल विकसित होगा।**

| Credits: **6** | **Core Compulsory** |
|---|---|

| Max. Marks 25 + 75 | Min. Passing Marks | |
|---|---|---|
| Unit<br>इकाई | Topics - पाठ्य विषय | No. of Lectures<br>व्याख्यान संख्या |
| | प्रथम भाग (Part – I) | |
| I | गद्य साहित्य का उद्भव एवं विकास<br>प्रमुख साहित्यकार – बाणभट्ट, दण्डी, सुबंधु, शूद्रक, अंबिकादत्तव्यास, पंडिता क्षमाराव | 11 |
| II | अपरीक्षित कारकम् (अनुवाद एवं व्याख्या) | 12 |
| III | शिवराजविजयम् – प्रथम निश्वास<br>(व्याख्या) | 12 |
| IV | उर्पयुक्त दोनों ग्रन्थों से सम्बन्धित समीक्षात्मक प्रश्न | 10 |
| | द्वितीय भाग (Part II) | |
| V | अनुवाद– हिन्दी से संस्कृत में (नियम निर्देश पूर्वक) | 12 |
| VI | अनुवाद – संस्कृत (अपठित) से हिन्दी अथवा अंग्रेजी में | 11 |
| VII | कम्प्यूटर का सामान्य परिचय, संस्कृत की दृष्टि से कम्प्यूटर की उपयोगिता, विभिन्न सॉफ्टवेयर<br>कम्प्यूटर में संस्कृत–हिन्दी लेखन हेतु उपयोगी टूल्स –यूनिकोड, गूगल इनपुट टूल, गूगल असिस्टेन्ट एवं वॉइस टाइपिंग आदि | 12 |
| VIII | | 10 |

| | | |
|---|---|---|
| | इंटरनेट का प्रयोग एवं वेब सर्च- ई टेक्स्ट, ई बुक्स, ई रिसर्च जनरल, ई मैग्जीन, डिजिटल लाइब्रेरी<br>ऑनलाइन टीचिंग लर्निंग प्लेटफॉर्म- जूम, टीम ,मीट, वेबैक्स<br>ऑनलाइन लर्निंग एवं रिसर्च प्लेटफार्म-स्वयं,मूक, ई-पाठशाला, डेलनेट, इनफ्लाइब्रेट, शोधगंगा, गूगल स्कॉलर आदि | |

संस्तुत ग्रंथ-


- शुकनासोपदेश,बाणभट्ट, (संपा.) चंद्रशेखर द्विवेदी,महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा, प्रथम संस्करण 1986-87
- शुकनासोपदेश, रामनाथ शर्मा सुमन, साहित्य भंडार, मेरठ
- शुकनासोपदेश, डॉ महेश कुमार श्रीवास्तव, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
- शुकनासोपदेश(कादंबरी), डॉ उमेश चंद्र पांडे, प्राच्य भारतीय संस्थान, गोरखपुर
- शिवराजविजयम्, अंबिकादत्त व्यास संपा. शिव करण शास्त्री महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा
- शिवराजविजयम्, डॉ रमा शंकर मिश्र, चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी
- शिवराजविजयम्, डॉ महेश कुमार श्रीवास्तव, विश्वविद्यालय प्रकाशन
- शिवराजविजयम्, डॉ देव नारायण मिश्र, साहित्य भंडार, मेरठ
- संस्कृत साहित्य का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी
- साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, डॉ उमेश चंद्र पांडे, प्राच्य भारतीय संस्थान, गोरखपुर
- संस्कृत साहित्य का इतिहास उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखंबा भारती अकादमी, वाराणसी, पुनर्मुद्रित 2012
- संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गैरोला, चौखंबा विद्याभवन वाराणसी, पंचम संस्करण 1997
- संस्कृत व्याकरण एवं अनुवाद कला, ललित कुमार मंडल, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली 2007
- अनुवाद चंद्रिका, डॉ यदुनंदन मिश्र, अनुवाद चंद्रिका, ब्रह्मानंद त्रिपाठी, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
- अनुवाद चंद्रिका, चंद्रधर हंस नौटियाल , मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1999
- संस्कृत रचना, वी० एस० आप्टे, (अनु०) उमेश चंद्र पांडेय, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी, 2008
- रचनानुवादकौमुदी, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2011
- कंप्यूटर का परिचय, गौरव अग्रवाल, शिवा प्रकाशन, इंदौर
- कंप्यूटर फंडामेंटल, पी.के सिन्हा, बी.पी.बी पब्लिकेशन, नई दिल्ली
- इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी, सुमिता अरोरा, धनपत राय पब्लिकेशन, नई दिल्ली


This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

**सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)**

.....

प्रस्तावित सतत मूल्यांकन-

( क) पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रंथों पर आधारित अधिन्यास (असाइनमेंट) एवं मौखिकी 15

| |
|---|
| अंक<br>अथवा<br>लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ लघु उत्तरीय)<br>(ख) संगणक प्रायोगिक परीक्षा 10 अंक |
| Course prerequisites:<br>सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)<br>.....<br>..... |
| Suggested equivalent online courses:<br>..... |
| Further Suggestions:<br>..... |

| | | |
|---|---|---|
| Programme/Class: **Diploma**<br>कार्यक्रम /वर्ग- **डिप्लोमा** | Year: **Second**<br>वर्ष- **द्वितीय** | Semester: **III**<br>सेमेस्टर – **तृतीय** |
| विषय- **संस्कृत** | | |
| प्रश्न पत्र कोड-A020301T | प्रश्न पत्र शीर्षक- **संस्कृत नाटक एवं व्याकरण** | |

Course outcomes: **अधिगम उपलब्धि-**

- संस्कृत नाट्य साहित्य को सामान्य रूप से समझ सकने में सक्षम होंगे ।
- नाटक की पारिभाषिक शब्दावली से सुपरिचित होंगे ।
- नाटक में प्रयुक्त रस, छंद एवं अलंकारों का सम्यक बोध कर सकेंगे ।
- संवाद एवं अभिनय कौशल में पारंगत होंगे ।
- नवीन पदों के ज्ञान द्वारा उनके शब्दकोश में वृद्धि होगी ।
- भारतीय सांस्कृतिक तत्वों एवं मूल्यों को आत्मसात कर, भारतीयता के गर्व बोध से युक्त उत्तम नागरिक बनेंगे।
- व्याकरण परक शब्दों की सिद्धि प्रक्रिया से परिचित हो सकेंगे।
- व्याकरण शास्त्र के ज्ञान के माध्यम से शुद्ध वाक्य विन्यास कौशल का विकास हो सकेगा।

| Credits : 6 | | Core Compulsory |
|---|---|---|
| Max. Marks 25 + 75 | | Min. Passing Marks |
| Unit<br>इकाई | Topics - पाठ्य विषय | No. of Lectures<br>व्याख्यान संख्या |
| | प्रथम भाग (Part – I) | |
| I | नाट्य साहित्य परम्परा तथा प्रमुख नाटककार –<br>भास, अश्वघोष, भवभूति, भट्टनारायण, विशाखदत्त | 12 |
| II | अभिज्ञान शाकुंतलम् (1 से 2 अंक) / मुद्राराक्षसं (1 से 2 अंक) | 11 |
| III | अभिज्ञान शाकुंतलम् (3 से 4 अंक) / मुद्राराक्षसं (3 से 4 अंक) | 11 |
| IV | स्वप्नवासवदत्तम् (प्रथम अंक) / मुद्राराक्षसं (5 से 7 अंक) | 11 |
| | द्वितीय भाग (Part II) | |
| V | रूप सिद्धि – सामान्य परिचय<br>अजन्त प्रकरण (लघु सिद्धान्त कौमुदी)<br>पुल्लिंग – राम, सर्व, हरि, सखि<br>सूत्र व्याख्या एवं शब्द रूप सिद्धि | 12 |
| VI | अजन्त प्रकरण (लघु सिद्धान्त कौमुदी)<br>स्त्रीलिंग – रमा, सर्वा, मति<br>नपुंसकलिंग – ज्ञान वारि<br>सूत्र व्याख्या एवं शब्द रूप सिद्धि | 11 |
| VII | हलन्त प्रकरण (लघु सिद्धान्त कौमुदी)<br>पुल्लिंग – इदम्, राजन्, तद्, अस्मद्, युष्मद् | 11 |

| | | |
|---|---|---|
| | सूत्र व्याख्या एवं शब्द रूप सिद्धि | |
| VIII | हलन्त प्रकरण ( लघु सिद्धांत कौमुदी)<br>स्त्रीलिंग - किम् अप् इदम्<br>नपुंसकलिंग- इदम् अहन्<br>सूत्र व्याख्या एवं शब्द रूप सिद्धि | 11 |

संस्तुत ग्रंथ-

- अभिज्ञानशाकुन्तलम्, डॉ कपिल देव द्विवेदी, रामनारायण लाल विजय कुमार प्रकाशन, इलाहाबाद
- अभिज्ञानशाकुन्तलम्, डॉ उमेश चंद्र पांडे, प्राच्य भारतीय संस्थान गोरखपुर
- अभिज्ञानशाकुन्तलम्, डॉ रमाशंकर त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन
- अभिज्ञानशाकुन्तलम्, डॉ निरूपण विद्यालंकार, साहित्य भंडार, मेरठ
- स्वप्नवासवदत्तम्, श्री तरणीश झा, रामनारायण लाल बेनी माधव प्रकाशक, इलाहाबाद
- स्वप्नवासवदत्तम्, जय कृष्ण दास हरिदास गुप्त, चौखंबा संस्कृत सीरीज, वाराणसी
- संस्कृत नाटक उद्भव और विकास, डॉ ए.वी.कीथ, अनुवादक उदयभानु सिंह
- नाट्य साहित्य का इतिहास और नाट्य सिद्धांत ,जय कुमार जैन, साहित्य भंडार, मेरठ, 2012
- संस्कृत के प्रमुख नाटककार और उनकी कृतियां, डॉ गंगासागर राय
- संस्कृत साहित्य का इतिहास उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखंबा भारती अकादमी, वाराणसी, पुनर्मुद्रित 2012
- संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गैरोला, चौखंबा विद्याभवन वाराणसी, पंचम संस्करण 1997
- लघु सिद्धांत कौमुदी, वरदराज, भैमी व्याख्या, भीमसेन शास्त्री (1-6 भाग),भैमी प्रकाशन, दिल्ली 1993
- लघु सिद्धांत कौमुदी, गोविंद प्रसाद शर्मा एवं आचार्य रघुनाथ शास्त्री, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन
- लघु सिद्धांत कौमुदी, डॉ उमेश चंद्र पांडे, चौखंबा प्रकाशन
- लघु सिद्धांत कौमुदी डॉ रामकृष्ण आचार्य विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

**सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)**

प्रस्तावित सतत मूल्यांकन-

( क) पाठ्यक्रम में निर्धारित नाटकों पर आधारित संवाद एवं अभिनय कौशल परीक्षा 15 अंक

| |
|---|
| अथवा<br>पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रंथों पर आधारित अधिन्यास (असाइनमेंट) एवं मौखिकी<br>(ख) लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ / लघु उत्तरीय) 10 अंक |
| Course prerequisites:<br>सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)<br>..... |
| Suggested equivalent online courses:<br>..... |
| Further Suggestions:<br>..... |

| Programme/Class: **Diploma**<br>कार्यक्रम /वर्ग- डिप्लोमा | Year: **Second**<br>वर्ष - द्वितीय | Semester: **IV**<br>सेमेस्टर - चतुर्थ |
|---|---|---|
| विषय- संस्कृत | | |
| प्रश्न पत्र कोड-A020401T | प्रश्न पत्र शीर्षक- काव्यशास्त्र एवं संस्कृत लेखन कौशल | |

Course outcomes: **अधिगम उपलब्धि-**

- विद्यार्थी काव्यशास्त्र के उद्भव और विकास से सुपरिचित होकर काव्य शास्त्रीय तत्वों को समझने में सक्षम होंगे ।
- छंद भेद एवं उनके नियमों को समझने में समर्थ होंगे ।
- संस्कृत अलंकारों के ज्ञान के माध्यम से काव्य के सौंदर्य का बोध कर सकेंगे ।
- कल्पनाशीलता एवं रचनात्मक क्षमता का विकास होगा ।
- शब्द ज्ञानकोप में वृद्धि होगी ।
- व्याकरण शास्त्र के ज्ञान के माध्यम से शुद्ध वाक्य विन्यास कौशल का विकास हो सकेगा।
- विद्यार्थियों में निवंध एवं अनुच्छेद लेखन क्षमता का विकास होगा।
- संस्कृत पत्र लेखन कौशल में वृद्धि होगी।
- अपठित अंश के माध्यम से विषय वस्तु अववोध एवं अभिव्यक्ति का कौशल विकसित होगा।

| Credits: **6** | **Core Compulsory** |
|---|---|
| Max. Marks: 25+75 | Min. Passing Marks: |
| Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): L-T-P: **6-0-0.** | |

| Unit<br>इकाई | Topics पाठ्य विषय | No. of Lectures<br>व्याख्यान संख्या |
|---|---|---|
| | प्रथम भाग (PART-1) | |
| I | संस्कृत काव्यशास्त्र परंपरा तथा प्रमुख का व शास्त्रीय ग्रंथ एवं आचार्य-<br>भामह, दण्डी, वामन, आनंदवर्धन, मम्मट, कुंतक, क्षेमेंद्र, विश्वनाथ, जगन्नाथ | 12 |
| II | साहित्य दर्पण (1-2 परिच्छेद ) | 11 |
| III | छंद (वृत्तरत्नाकर से अधोलिखित छंद)<br>अनुष्टुप ,आर्या, वंशस्थ, द्रुतविलंबित, भुजंगप्रयात, बसंततिलका, इंद्रवज्रा, उपेंद्रवज्रा, उपजाति, मालिनी, मंदाक्रांता, शिखरिणी, शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा | 11 |
| IV | अलंकार ( साहित्य दर्पण से अधोलिखित अलंकार)<br>अनुप्रास, यमक, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, संदेह, भ्रांतिमान, दृष्टांत, निदर्शना, विभावना, विशेषोक्ति, अर्थान्तरन्यास, समासोक्ति | 11 |
| | द्वितीय भाग (PART-2) | |
| V | निबंध | 12 |
| VI | पत्र व्यवहार | 11 |

| | | |
|---|---|---|
| VII | समसामयिक विषयों पर अनुच्छेद लेखन अथवा<br>विज्ञापन अथवा समाचार लेखन | 11 |
| VIII | अपठित गद्यांश अथवा पद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर | 11 |

संस्तुत ग्रंथ-


- साहित्य दर्पण (विश्वनाथ कविराज), सत्यव्रत सिंह, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी
- साहित्य दर्पण, शालिग्राम शास्त्री मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, वाराणसी
- साहित्य दर्पण, राज किशोर सिंह प्रकाशक केंद्र, लखनऊ
- वृत्तरत्नाकरः श्री केदारभट्ट, (व्या.) बल्देव उपाध्याय , चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी , 2011
- छन्दोऽलंकारसौरभम्, डॉ. सावित्री गुप्ता, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 2009
- छन्दोऽलंकारसौरभम्, प्रो.राजेंद्र मिश्र, अक्षय वट प्रकाशन
- छंदमंजरी विकास, हरिदत्त उपाध्याय
- काव्यदीपिका, कांति चंद्र भट्टाचार्य, साहित्य भंडार, मेरठ
- काव्यदीपिका, डॉ बाबूराम त्रिपाठी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- संस्कृत साहित्य का इतिहास उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखंबा भारती अकादमी, वाराणसी, पुनर्मुद्रित 2012
- संस्कृत साहित्य का इतिहास, वाचस्पति गैरोला, चौखंबा विद्याभवन वाराणसी, पंचम संस्करण 1997
- हायर संस्कृत ग्रामर, मोरेश्वर रामचंद्र काले, (हिंदी अनुवादक ) कपिल देव द्विवेदी, श्री रामनारायणलाल बेनीप्रसाद, इलाहाबाद 2001
- संस्कृत व्याकरण एवं अनुवाद कला, ललित कुमार मंडल, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली 2007
- अनुवाद चंद्रिका, डॉ यदुनंदन मिश्र, अनुवाद चंद्रिका, ब्रह्मानंद त्रिपाठी, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
- अनुवाद चंद्रिका, चंद्रधर हंस नौटियाल, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1999
- संस्कृत रचना, वी० एस० आप्टे, (अनु०) उमेश चंद्र पांडेय, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी, 2008
- रचनानुवादकौमुदी, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2011
- संस्कृतनिबन्धशतकम्, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, 2010
- संस्कृतनिबन्धावली, रामजी उपाध्याय, चौखंबा प्रकाशन
- संस्कृत निवन्ध सुधा, राधेश्याम गंगवार, नागराज प्रकाशन, पिथौरागढ़, 2005


This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

**सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)**

| |
|---|
| प्रस्तावित सतत मूल्यांकन-<br>( क) अधिन्यास (असाइनमेंट) एवं मौखिकी 15 अंक<br>अथवा<br>किसी एक छंद अथवा अलंकार के लक्षण एवं न्यूनतम 10 उदाहरण (संगति सहित)<br>के संकलन से संबंधित परियोजना कार्य एवं मौखिकी<br>अथवा<br>प्रदत्त अपठित श्लोकों में छंद एवं अलंकार निर्धारण विषयक प्रायोगिकी<br>(ख) लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ / लघु उत्तरीय) 10 अंक |
| Course prerequisites:<br>सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)<br>..... |
| Suggested equivalent online courses:<br>..... |
| Further Suggestions:<br>..... |

| Programme/Class: **Bachelor** कार्यक्रम /वर्ग- **स्नातक डिग्री** | Year: **Third** वर्ष- **तृतीय** | Semester: **V** सेमेस्टर - **पंचम** |
|---|---|---|
| विषय- **संस्कृत** | | |
| प्रश्न पत्र कोड-A020501T | प्रश्न पत्र शीर्षक- **प्रथम प्रश्न पत्र- वैदिक वाङ्मय एवं भारतीय दर्शन** | |

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

- वैदिक वाङ्मय एवं संस्कृति का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- वैदिक एवं औपनिषदिक संस्कृति के प्रति गौरव बोध होगा।
- वेदोक्त संदेशों एवं मूल्यों के माध्यम से आचरण का उदात्तीकरण होगा।
- उपनिषद् का सामान्य परिचय एवं निहित उपदेशों का अवबोध होगा।
- औपनिषदिक कर्म संयम भक्ति एवं त्यागमूलक संस्कृति से परिचित होंगे।
- वैदिक एवं औपनिषदिक संस्कृति के प्रति गौरव बोध होगा वैदिक सूक्तों के माध्यम से विद्यार्थियों को तत्कालीन आध्यात्मिक सामाजिक एवं राष्ट्रीय परिदृश्य का निदर्शन होगा।

- भारतीय दार्शनिक तत्वों का सामान्य ज्ञान प्राप्त होगा।
- दार्शनिक तत्वों में अनुस्यूत गूढ़ार्थ बोध होगा।
- दार्शनिक तत्वों के प्रति विश्लेषणात्मक एवं तार्किक क्षमता का विकास होगा।
- दर्शन में विद्यमान नैतिक एवं कल्याणपरक तथ्यों से आत्मोत्कर्ष की अभिप्रेरणा प्राप्त होगी।
- भारतीय दर्शन में निहित उद्देश्यों एवं ज्ञान को आचरण में समाहित करने हेतु अभिप्रेरित होंगे।
- गीता ज्ञान रहस्य द्वारा सृष्टि कल्याणार्थ भाव विकसित होंगे।

| Credits: **5** | **Core Compulsory** |
|---|---|
| Max. Marks: **25+75** | Min. Passing Marks: |

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): L-T-P: **5-0-0.**

| **Unit** इकाई | **Topics** पाठ्य विषय | **No. of Lectures** व्याख्यान संख्या |
|---|---|---|
| | **प्रथम भाग (PART-1)** | |
| I | वैदिक वाङ्मय का सामान्य परिचय<br>( संहिता, ब्राह्मण ,आरण्यक, उपनिषद् एवं वेदांग ) | 9 |
| II | ऋग्वेद संहिता- अग्नि सूक्त(1.1), विष्णु सूक्त (1.154), पुरुष सूक्त (10.90), हिरण्यगर्भ सूक्त (10.121), वाक् सूक्त (10.125) | 9 |
| III | यजुर्वेद संहिता- शिव संकल्प सूक्त<br>अथर्ववेद संहिता - पृथ्वी सूक्त (12.1) (1 से 12 मन्त्र), सामंनस्य सूक्त (3.30) | 9 |
| IV | ईशावास्योपनिषद्<br>व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न | 9 |
| | **द्वितीय भाग (PART-2)** | |
| V | भारतीय दर्शन का सामान्य परिचय। | 9 |

| | | |
|---|---|---|
| | दर्शन का अर्थ एवं महत्व<br>नास्तिक दर्शन – चार्वाक, जैन और बौद्ध ।<br>आस्तिक दर्शन– न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा एवं वेदांत<br>(परिचयात्मक प्रश्न) | |
| VI | श्रीमद्भगवतगीता – द्वितीय अध्याय<br>व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न | 10 |
| VII | कठोपनिषद् (प्रथम अध्याय)<br>अनुवाद एवं समीक्षात्मक प्रश्न | 10 |
| VIII | कठोपनिषद् (द्वितीय अध्याय)<br>अनुवाद एवं समीक्षात्मक प्रश्न | 10 |
| | संस्तुत ग्रन्थ –<br>– ईशावास्योपनिषद्,डॉ0 शिव प्रसाद द्विवेदी, चौखम्बा वाराणसी<br>– ईशावास्योपनिषद्, गीता प्रेस, गोरखपुर<br>–ऋग्वेद संहिता, रामगोविन्द त्रिवेदी, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी<br>– ऋक्सूक्त संग्रह, हरिदत्त शास्त्री, साहित्य भंडार, मेरठ<br>– वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, वाचस्पति, चौखम्बा प्रकाशन<br>– वैदिक साहित्य का इतिहास, डॉ0 करन सिंह, साहित्य भंडार, मेरठ । | |

भागों में), राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 1969-1989

- भारतीय दर्शन, एस. राधाकृष्णन, (अनु०) नंदकिशोर गोभिल, राजपाल एंड संस, दिल्ली, 1989
- भारतीय दर्शन की रूपरेखा, एम.हिरियन्ना , (अनु०) गोवर्धन भट्ट मंजू गुप्त एवं सुखबीर चौधरी, राजकमल प्रकाशन , दिल्ली 1965

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

**सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)**

.....

**प्रस्तावित सतत मूल्यांकन-**

**( क) वैदिक मंत्रों का शुद्ध एवं स्वर उच्चारण (भावार्थ सहित )** **15 अंक**

**अथवा**

**अधिन्यास(असाइनमेंट) एवं मौखिकी**

**(ख) लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ /लघु उत्तरीय)** **10 अंक**

Course prerequisites:

.....**सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)**

.....

Suggested equivalent online courses:

.....

Further Suggestions:

.....

| Programme/Class: **Bachelor** कार्यक्रम /वर्ग- **स्नातक डिग्री** | Year: **Third** वर्ष- **तृतीय** | Semester: **V** सेमेस्टर - **पंचम** |
|---|---|---|
| विषय- **संस्कृत** | | |
| प्रश्न पत्र कोड-A020502T | प्रश्न पत्र शीर्षक- **द्वितीय प्रश्न पत्र - व्याकरण एवं भाषा विज्ञान** | |

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

- **भाषा विज्ञान के उद्भव एवं विकास का सामान्य ज्ञान प्राप्त होगा।**
- **संस्कृत भाषा एवं व्याकरण की वैज्ञानिकता का अवबोध होगा।**

| Credits : 5 | | Core Compulsory |
|---|---|---|
| Max. Marks 25 + 75 | | Min. Passing Marks |
| Unit<br>इकाई | Topics - पाठ्य विषय | No. of Lectures<br>व्याख्यान संख्या |
| I | कृदन्त प्रकरण से पूर्वकृदन्तं (सम्पूर्ण) – लघु सिद्धान्त कौमुदी | 11 |
| II | कृदन्त प्रकरण– उत्तर कृदन्तम् (सम्पूर्ण)–लघु सिद्धान्त कौमुदी | 10 |
| III | अव्ययानि – लघु सिद्धान्त कौमुदी | 09 |
| IV | विभक्त्यर्थ प्रकरण – लघु सिद्धान्त कौमुदी | 09 |
| V | समास प्रकरण – केवल समास (लघु सिद्धान्त कौमुदी) | 09 |
| VI | स्त्री प्रत्यय (लघु सिद्धान्त कौमुदी) | 09 |
| VII | भाषा विज्ञान का स्वरूप, भाषा विज्ञान के मुख्य अंग एवं उपादेयता | 09 |

| | | |
|---|---|---|
| | भाषा की परिभाषा एवं स्वरूप , भाषा की विशेषताएं, भावाभिव्यक्ति के साधन एवं भाषा के अनेक रूप (बोली भाषा विभाषा) | |
| VIII | भाषा का उद्भव एवं विकास, भाषा परिवर्तन की दिशाएं एवं कारण , ध्वनि परिवर्तन की दिशाएं एवं कारण | 9 |

संस्तुत ग्रंथ-

- लघु सिद्धांत कौमुदी, वरदराज, भैमी व्याख्या , भीमसेन शास्त्री (1-6 भाग) ,भैमी प्रकाशन, दिल्ली 1993
- लघु सिद्धांत कौमुदी, गोविंद प्रसाद शर्मा एवं आचार्य रघुनाथ शास्त्री,चौखंबा सुरभारती प्रकाशन
- लघु सिद्धांत कौमुदी, डॉ उमेश चंद्र पांडे, चौखंबा प्रकाशन
- लघु सिद्धांत कौमुदी डॉ रामकृष्ण आचार्य विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- कृदन्तसूत्रावली, बृजेश कुमार शुक्ल, प्रकाशन केन्द्र ,लखनऊ
- भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र , कपिल देव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी , द्वादश संस्करण 2010
- भाषा विज्ञान, भोलानाथ तिवारी, किताब महल प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

**सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)**

.....

प्रस्तावित सतत मूल्यांकन-

**(क) अधिन्यास ( असाइनमेंट ) एवं मौखिकी** **15 अंक**

**(ख) लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ लघु उत्तरीय)** **10 अंक**

Course prerequisites:

**सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)**

.....

Suggested equivalent online courses:

.....

Further Suggestions:

.....

| | | |
|---|---|---|
| Programme/Class: **Bachelor** कार्यक्रम /वर्ग- | Year: **Third** वर्ष- तृतीय | Semester: **VI** |

| स्नातक डिग्री | | सेमेस्टर - **षष्ठ** |
|---|---|---|
| विषय- **संस्कृत** | | |
| प्रश्न पत्र कोड-A020601T | प्रश्न पत्र शीर्षक- **प्रथम प्रश्न पत्र - आधुनिक संस्कृत साहित्य** | |

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

- **आधुनिक संस्कृत-कवियों से सुपरिचित होंगे।**
- **नवीन बिम्वविधानों एवं नवीन विषयों का ज्ञान प्राप्त होगा।**
- **आधुनिक संस्कृत-साहित्य के बाल-साहित्य से परिचित होते हुए संस्कृत-शिक्षण की सरलतम विधि के प्रति उन्मुख होंगे।**
- **आधुनिक संस्कृत-साहित्य में विद्यमान नैतिक एवं कल्याणपरक तथ्यों से आत्मोत्कर्ष की अभिप्रेरणा प्राप्त होगी।**
- **आधुनिक संस्कृत-साहित्य में निहित उद्देश्यों एवं ज्ञान को आचरण में समाहित करने हेतु अभिप्रेरित होंगे।**

| Credits: **5** | **Core Compulsory** |
|---|---|
| Max. Marks: 25+75 | Min. Passing Marks: |

Total No. of Lectures-Tutorials-Practical (in hours per week): L-T-P: **5-0-0**

| **Unit** इकाई | **Topics** पाठ्य विषय | **No. of Lectures** व्याख्यान संख्या |
|---|---|---|
| I | **आधुनिक संस्कृत साहित्य के प्रमुख कवि एवं उनकी कृतियों का सामान्य परिचय** | 10 |
| II | **आधुनिक महाकाव्य**<br>**उत्तरसीताचरितम् (सप्तम सर्ग- विद्याधिगमः)** 106 - 120<br>**प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी** | 10 |
| III | **आधुनिक काव्य**<br>**श्रम-माहात्म्यम् (षोडशी) -श्रीधर भास्कर वर्णेकर** | 9 |
| IV | **आधुनिक-नाटक** | 9 |

| | | |
|---|---|---|
| | आधुनिक नाटक - उत्तरसीताचरितम्, श्रममाहात्म्यम् ग्रन्थों पर आधारित समीक्षात्मक प्रश्न | |
| V | संस्कृत उपन्यास<br>पद्मिनी (प्रथम विकास ) मोहन लाल शर्मा पाण्डे | 09 |
| VI | संस्कृत गीतिकाव्य<br>तदेवं गगनं सैव धरा ( आचार्य श्रीनिवास रथ )<br>निम्न पाँच रचनाएं -<br>• तदेव गगनं सैव धरा<br>• भारतजननी<br>• रक्ष तद्भारतम्<br>• रामो याति वनम्<br>• जयति संस्कृतभारती | |
| VII | संस्कृत कथा<br>कथामुक्तावली (क्षणिकविभ्रमः) पण्डिता क्षमाराव | 09 |
| VIII | पद्मिनी (प्रथम विकास), कथामुक्तावली से सम्बन्धित प्रश्न | 09 |
| | संस्तुतग्रन्थ -<br>- कथामुक्तावली पण्डिता क्षमाराव<br>- उत्तरसीताचरितम् - प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी, कालिदास संस्थानम्, वाराणसी- 5<br>- षोडशी - श्रीधर भास्कर वर्णेकर, प्रो. राधा वल्लभ त्रिपाठी, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ।<br>- तदेव गगनं सैव धरा, आचार्य श्रीनिवास रथ, राष्ट्रिय- संस्कृत- संस्थानम्, नई दिल्ली ।<br>- पद्मिनी, मोहन लाल शर्मा पाण्डे, पाण्डेय प्रकाशन जयपुर । | |

| सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)..... | |
|---|---|
| प्रस्तावित सतत मूल्यांकन-<br>(क) आधुनिक संस्कृत पुस्तक समीक्षा एवं मौखिकी<br>अथवा<br>आधुनिक संस्कृत साहित्य का सर्वेक्षण एवं मौखिकी | 15 अंक |
| (ख) लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ लघु उत्तरीय) | 10 अंक |
| Course prerequisites:<br>सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL ) ..... | |
| Suggested equivalent online courses:<br>..... | |
| Further Suggestions:<br>..... | |

| Programme/Class:<br>Bachelor<br>कार्यक्रम /वर्ग- स्नातक डिग्री | Year: Third<br>वर्ष- तृतीय | Semester: six<br>सेमेस्टर - षष्ठ |
|---|---|---|
| विषय- संस्कृत | | |
| प्रश्न पत्र कोड-A020602T | प्रश्न पत्र शीर्षक- द्वितीय प्रश्न पत्र ( वैकल्पिक) - योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा | |

Course outcomes: अधिगम उपलब्धि-

- भारतीय योग शास्त्र के प्राचीन एवं वैज्ञानिक ज्ञान से लाभान्वित होंगे।
- योग शास्त्र के मूलभूत सिद्धांतों को जानकर योग की महत्ता से परिचित होंगे।
- योग के वास्तविक स्वरूप के अवबोध द्वारा योग को जीवन में समाहित करने हेतु प्रेरित होंगे।
- योग के आसनों के सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक दोनों पक्षों को समान रूप से सीख सकेंगे।
- योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा के अनुप्रयोग द्वारा स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकने में समर्थ होंगे

| Credits : 5 | Core Compulsory | |
|---|---|---|
| Max. Marks 25 + 75 | Min. Passing Marks | |
| Unit<br>इकाई | Topics - पाठ्य विषय | No. of Lectures<br>व्याख्यान संख्या |
| I | योग की भारतीय अवधारणा<br>उपयोगिता एवं महत्व<br>प्रमुख आचार्य एवं ग्रन्थ | 10 |
| II | योगसूत्र – समाधि पाद (सूत्र 1 से 18 तक) | 10 |
| III | योगसूत्र – साधना पाद (सूत्र 29 से 55 तक) | 10 |
| IV | योगसूत्र विभूति पाद (सूत्र 1 से 15 तक) | 09 |
| V | घेरण्ड संहिता – प्रथमोपदेश (श्लोक 1 से 32 तक) | 09 |
| VI | घेरण्ड संहिता – प्रथमोपदेश (श्लोक 33 से 60 तक) | 09 |
| VII | घेरण्ड संहिता – द्वितीयोपदेश (आसनप्रकरणम्)<br>सिद्धासन, पदमासन, भद्रासन, मुक्तासन, वज्रासन, स्वस्तिकासन, सिंहासन, गोमुखासन् | 09 |
| VIII | घेरण्ड संहिता – द्वितीयोपदेश (आसनप्रकरणम्)<br>वीरासन, धनुरासन, मृतासन, मत्स्यासन, पश्चिमोत्तानासन, गरुड़ासन, मकरासन, भुजंगासन | 09 |
| | संस्तुत ग्रन्थ –<br>पातंजलयोगदर्शनम्, पतंजलि कृत योगसूत्र, व्यास भाष्य, वाचस्पति मिश्र कृत तत्त्ववैशारदी एवं विज्ञान भिक्षु कृत योगवार्त्तिक सहित, (संपादक) नारायण मिश्र, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी, 1981 | |

- योग दर्शन , हरि कृष्णदास गोयन्दका, गीता प्रेस,गोरखपुर
- पातंजलयोगदर्शनम्, सुरेश चंद श्रीवास्तव, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी
- घेरंड संहिता, घेरण्ड मुनि, भाष्यकार स्वामी जी महाराज, पीतांबरा पीठ , दतिया, मध्य प्रदेश
- यज्ञ चिकित्सा, ब्रह्मवर्चस, शांतिकुंज, हरिद्वार
- योग तथा मानसिक स्वास्थ्य, पी.डी. मिश्र, रॉयल बुक कंपनी, लखनऊ
- योग एवं स्वास्थ्य, पी. डी. मिश्र, रैपिडेक्स बुक्स, पुस्तक महल
- सूर्य किरण चिकित्सा विज्ञान, अमर जीत, खंडेलवाल प्रकाशन, जयपुर
- नेचर क्योर फिलासफी एंड मेथड्स, पी.डी. मिश्र, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ

This course can be opted as an elective by the students of following subjects:

**सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)**

.....

**प्रस्तावित सतत मूल्यांकन-**

**( क) योगासनों का प्रदर्शन** **15 अंक**

**अथवा**

**अधिन्यास (असाइनमेंट) एवं मौखिकी**

**(ख) लिखित परीक्षा (वस्तुनिष्ठ लघु उत्तरीय)** **10 अंक**

Course prerequisites:

**सभी के लिए उपलब्ध (OPEN TO ALL)** .....

Suggested equivalent online courses:

.....

Further Suggestions:

.....